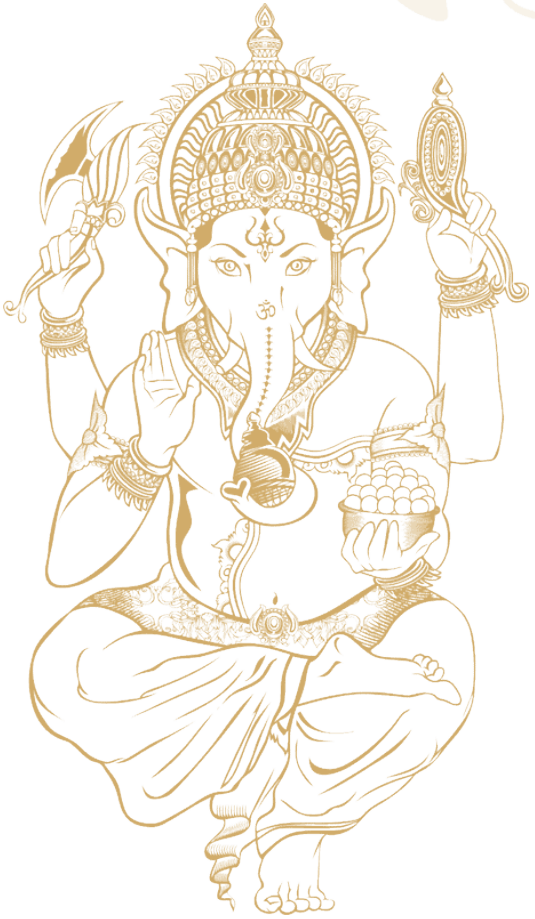

Hiya Aggrawal

04 Oct 2007

06:28 PM

Toronto

Model: Baby-Horoscope

Order No: 119552601

तिथि 04/10/2007 **समय** 18:28:00 **वार** गुरुवार **स्थान** Toronto **चित्रपक्षीय अयनांश** : 23:58:02
अक्षांश 43:39:00 उत्तर **रेखांश** 79:20:00 पश्चिम **मध्य रेखांश** 75:00:00 पश्चिम **स्थानिक संस्कार** -01:17:20 घंटे

पंचांग

साम्पातिक काल	18:03:35 घं
वेलान्तर	00:11:14 घं
सूर्योदय	07:18:05 घं
सूर्यास्त	18:53:22 घं
चैत्रादि संवत	2064
शक संवत	1929
मास	आश्विन
पक्ष	कृष्ण
तिथि	10
नक्षत्र	पुष्य
योग	शिव
करण	वणिज

अवकहड़ा चक्र

गण	देव
योनि	मेष
नाड़ी	मध्य
वर्ण	विप्र
वश्य	जलचर
वर्ग	मेष
युँजा	मध्य
हंसक	जल
जन्म नामाक्षर	हू-हुस्नी
पाया(रा.-न.)	रजत-रजत
होरा	बुध
चौघड़िया	शुभ

विंशोत्तरी

शनि 15वर्ष 1मा 20दि

बुध

24/11/2022
24/11/2039

बुध	22/04/2025
केतु	19/04/2026
शुक्र	17/02/2029
सूर्य	24/12/2029
चन्द्र	26/05/2031
मंगल	22/05/2032
राहु	09/12/2034
गुरु	16/03/2037
शनि	24/11/2039

योगिनी

धान्या 2वर्ष 4मा 20दि

सिद्धा

23/02/2025
24/02/2032

सिद्धा	05/07/2026
संकटा	24/01/2028
मंगला	04/04/2028
पिंगला	24/08/2028
धान्या	26/03/2029
भ्रामरी	04/01/2030
भद्रिका	25/12/2030
उल्का	24/02/2032

ग्रह	व	अ	अंश	राशि	नक्षत्र	पद	स्वामी	अं.	स्थिति	षट्बल	चर	स्थिर	ग्रह तारा
लग्न			07:42:05	मीन	उ०भाद्रपद	2	शनि	केतु	---	0:00			
सूर्य			17:20:43	कन्या	हस्त	3	चंद्र	शनि	सम राशि	1.36	अमात्य	पितृ	साधक
चंद्र			06:02:33	कर्क	पुष्य	1	शनि	बुध	स्वराशि	1.32	ज्ञाति	मातृ	जन्म
मंगल			08:38:37	मिथु	आर्द्रा	1	राहु	राहु	शत्रु राशि	1.27	पुत्र	भ्रातृ	मित्र
बुध			12:24:47	तुला	स्वाति	2	राहु	शनि	मित्र राशि	1.14	भ्रातृ	ज्ञाति	मित्र
गुरु			20:51:10	वृश्चि	ज्येष्ठा	2	बुध	शुक्र	मित्र राशि	0.88	आत्मा	धन	सम्पत
शुक्र			03:30:11	सिंह	मघा	2	केतु	सूर्य	शत्रु राशि	1.17	कलत्र	कलत्र	विपत
शनि			09:54:11	सिंह	मघा	3	केतु	शनि	शत्रु राशि	1.46	मातृ	आयु	विपत
राहु			12:40:52	कुंभ	शतभिषा	2	राहु	बुध	मित्र राशि		---	ज्ञान	मित्र
केतु			12:40:52	सिंह	मघा	4	केतु	बुध	शत्रु राशि		---	मोक्ष	विपत

लग्न-चलित

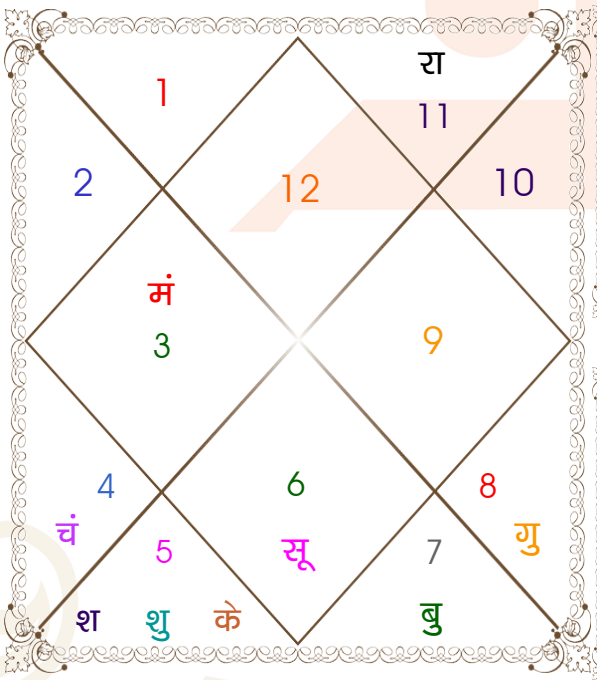

चन्द्र कुंडली

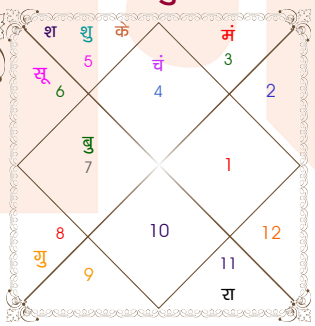

नवमांश कुंडली

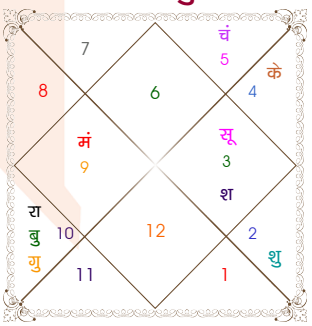

सर्वाष्टकवर्ग

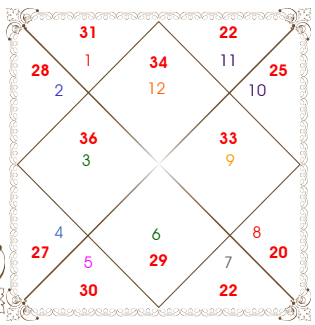

दशमांश कुंडली

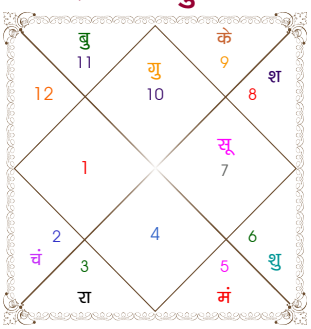

नक्षत्रफल

आप पुष्य नक्षत्र के प्रथम चरण में उत्पन्न हुई हैं। अतः आपकी जन्म राशि कर्क तथा राशि स्वामी चन्द्र होगा। नक्षत्र के अनुसार आपकी योनि मेष, वर्ण विप्र, वर्ग मेष, देव गण तथा मध्य नाड़ी होगी। नक्षत्र के चरणानुसार आपके जन्म नाम का प्रारम्भ "हु" अक्षर से होगा।

आप देवताओं की पूजा द्वारा अर्जित धन से धनयुक्त रहेंगी। आपकी बुद्धि तीक्ष्ण होगी तथा अपने अधिकांश कार्यों को बुद्धिमता से सम्पन्न करेंगी। आपको विविध प्रकार के शास्त्रों का ज्ञान भी रहेगा। साथ ही देखने में भी अति सुन्दर होंगी तथा सभी लोग आपसे स्नेह का भाव रखेंगे इस प्रकार आप सब की प्रिय रहेंगी। आप अपने जीवन में समस्त सुखों के उपभोग करने में सफल रहेंगी। आपकी प्रकृति कफ से युक्त रहेगी।

देवकर्म धनैर्युक्तो बुद्धियुक्तो विचक्षणः।
पुष्ये जायते लोकः शीतश्च सुभगः सुखीः।।
जातक दीपिका

अर्थात् पुष्य नक्षत्र में उत्पन्न जातक देवार्चन से प्राप्त धन से युक्त, बुद्धिमान, कफ प्रकृति तथा सुख से परिपूर्ण होता है।

धार्मिकता की भावना नैसर्गिक रूप से आप में विद्यमान रहेगी तथा ईश्वर में आपकी पूर्ण आस्था रहेगी। आप शान्त चित्त की महिला होंगी तथा हमेशा शान्तचित्त से ही अपने समस्त कार्यों को करेंगी। इसके साथ ही पुत्र धन से भी आप सुशोभित रहेंगी।

देवधर्म धनैर्युक्तः पुत्रयुक्तो विचक्षणः।
पुष्ये जायते लोके शान्तात्मा सुभगः सुखी।।
मानसागरी

अर्थात पुष्य नक्षत्र का पुरुष देवता तथा धर्म को मानने वाला, धन से युक्त, पुत्रयुक्त, विद्वान, शान्त, सुन्दर तथा सुखी होता है।

ब्राहमण तथा देवताओं की आप भक्त होंगी तथा इनके प्रति पूर्ण श्रद्धा तथा सम्मान का भाव रहेगा तथा समयानुसार इनकी पूजा तथा अर्चना करती रहेंगी। धन से आप हमेशा सुसम्पन्न रहेंगी। साथ ही उच्चाधिकार प्राप्त वर्ग आपसे पूर्ण प्रभावित रहेगा तथा इस वर्ग से आपको पूर्ण सम्मान तथा सहयोग की प्राप्ति होगी। आप अपने बन्धुओं से भी युक्त रहेंगी तथा उनसे अच्छे संबंध रखेंगी।

शान्तात्मा सुभगः पण्डितो धनी धर्मसंभृतः पुष्ये।
बृहज्जातकम्

अर्थात पुष्य नक्षत्र का बालक हृदय से शान्त प्रकृति वाला, सर्वप्रिय, सुन्दर, विद्वान

धन से सम्पन्न तथा धर्माचरण में तत्पर रहता है।

शारीरिक दृष्टि से आप हमेशा स्वस्थ तथा प्रसन्न चित्त रहेंगी। माता पिता अथवा सास सुसुर के प्रति आप पूर्ण रूप से अपने कर्तव्य का पालन करेंगी तथा यत्नपूर्वक उनकी सेवा में तत्पर रहेंगी। समाज में लोगों के साथ आपका अत्यन्त ही विनम्रता पूर्वक व्यवहार रहेगा तथा समाज से आपको पूर्ण मान सम्मान तथा आदर की प्राप्ति होगी। इसके अतिरिक्त नाना प्रकार के धन तथा सुखों से आप आजीवन परिपूर्ण रहेंगी।

प्रसन्नगात्रः पितृमातृभक्तः स्वधर्मसक्तो विनयाभियुक्तः।
भवेन्मनुष्यः खलु पुष्यजन्मा सम्माननानाधनवाहनाढ्यः।
जातकाभरणम्

अर्थात पुष्य नक्षत्र में पैदा हुआ मनुष्य स्वस्थ शरीर वाला, माता पिता का भक्त, अपने धर्म में आस्था रखने वाला, नम्र, लोक में मान्य तथा धनवाहन आदि के सुख से परिपूर्ण होता है।

रजत पाद में जन्म होने के कारण आपकी शारीरिक सुन्दरता दर्शनीय रहेगी तथा इसमें पूर्ण कोमलता तथा कान्ति भी विराजमान रहेगी। आपकी मुखाकृति अत्यन्त ही सुन्दर एवं आकर्षक रहेगी। आपका इन्द्रियों पर पूर्ण नियंत्रण रहेगा तथा अनावश्यक इच्छाओं का आप में सर्वथा अभाव रहेगा। सत्य के प्रति आपकी पूर्ण निष्ठा रहेगी तथा प्रयत्न पूर्वक इसका पालन करती रहेंगी आपकी गति मधुर एवं आकर्षक रहेगी। जीवन में धन सम्पति तथा पुत्र से आप सुसम्पन्न तथा प्रसन्न रहेंगी। आपके पति पूर्ण रूप से आपका सम्मान करेंगे एवं अधिकांशतया मुख्य कार्यों को आपके कथनानुसार ही सम्पन्न करेंगे। आप सुशील एवं विन्रम स्वभाव की महिला होंगी तथा धन संचय के प्रति भी आप पूर्ण रूप से यत्नशील रहेंगी। जीवन में समस्त सुखसंसाधनों को अर्जित करने में आप सफल रहेंगी तथा सुखपूर्वक इनका उपभोग भी करेंगी। इसके अतिरिक्त विभिन्न प्रकार के धनैश्वर्य से भी आप सम्पन्न रहेंगी। साथ ही आप एक बुद्धिमती महिला होंगी तथा अधिकांश सद्गुणों से सम्पन्न रहेंगी।

कर्क राशि में उत्पन्न होने के कारण आप का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा। आप अपने समस्त कार्यों को निपुणता से सम्पन्न करेंगी तथा आजीवन धन से परिपूर्ण होकर धनवान कहलाएंगी। आप नैसर्गिक रूप से पराक्रमी होंगी तथा धार्मिकता की भावना से भी युक्त रहेंगी। आप पूर्ण श्रद्धा के साथ धर्म का पालन करेंगी। गुरूजनों की आप हमेशा स्नेहपात्र रहेंगी तथा उनका आर्शीवाद आपके साथ रहेगा। आप तीव्र बुद्धि की स्वामिनी होंगी तथा आपकी बुद्धि से सभी लोग प्रभावित रहेंगे। कभी कभी आपको क्रोध अधिक मात्रा में आएगा तथा दुःख की भी आप अनुभूति करेंगी। आपके सभी मित्र अच्छे तथा सद्गुणों से युक्त होंगे। आप एक से अधिक कार्यों अथवा कलाओं के जानने में समर्थ होंगी बल आप में सामान्य रूप से रहेगा। आप घर से दूर अन्यत्र स्थाई या अस्थाई रूप से निवास करेंगी।

कार्यकारी धनीशूरो धर्मिष्ठो गुरूवत्सलः।
शिरो रोगी महाबुद्धिः कृशाङ्गः कृत्यवित्तमः।।

प्रवासशीलः कोपाढ्योडबलो दुःखी सुमित्रकः।
अनासक्तो गृहे वक्रः कर्कराशौ भवेन्नरः।।
मानसागरी

आपकी प्रकृति वात तथा कफ मिश्रित रहेगी तथा आपका सौन्दर्य अत्यन्ताकर्षक तथा रूप तेज तथा ओज से परिपूर्ण होगा। आप स्वयं अपनी बुद्धि तथा परिश्रम से अर्जित विपुल धन की स्वामिनी बनकर धनाढ्य कहलाएंगी। ब्राहमणों तथा देवताओं के प्रति आपकी पूर्ण श्रद्धा रहेगी तथा समय समय पर आप इनका हार्दिक सत्कार तथा श्रद्धापूर्वक पूजार्चन सम्पन्न करेंगी। उत्तम कुल में उत्पन्न लोगों के प्रति आपके मन में उचित आदर तथा सम्मान का भाव रहेगा तथा इनकी सेवा एवं सहयोग करना आप अपना कर्तव्य समझेंगी।

पवनकफशरीरो देव संकाश रूपः।
स्वयमुपचित्तवित्तो देवताविप्रभक्तः।।
कुलजन परिसेवी मण्डलाकार मध्ये।
भवति विपुलवित्तः कर्कटौ यस्यराशिः।।
जातक दीपिका

आप वेदादिशास्त्रों का अध्ययन करके ज्ञान प्राप्त करेंगी। आप एक या एक से अधिक कार्यों तथा कलाओं में निपुण होंगी। आप मध्यम बली तथा सदाचारी रहेंगी। पुष्पों की सुगन्ध तथा जलक्रीड़ा की आप अत्यन्त शौकीन रहेंगी तथा समाज में पूर्ण रूप से यश प्राप्त करेंगी।

श्रुतकलाबलनिर्मलवृतयः कुसुमगंध जलाशयकेलयः।
किल नरास्तु कुलीरगते विधौ वसुमतीसुमती स्मितलब्धयः।
जातकाभरणम्

आपके गले का भाग स्थूल रहेगा तथा पुरूष वर्ग को आप पूर्ण रूप से अपने वश में करने में सफलता प्राप्त करेंगी। जल विहार करने में आपको आनन्द की प्राप्ति होगी आप बहुत से मित्रों की मित्र होंगी। साथ ही आप के द्वारा बहुत से भवनों का भी निर्माण किया जाएगा अथवा आप स्वयं बहुत से मकानों की स्वामिनी हो सकती हैं। आपका कद सामान्य रहेगा तथा आप टेढ़ी चाल से शीघ्र चलने वाली होंगी। साथ ही आपके पुत्रों की संख्या भी अल्प ही होगी।

स्त्रीनिर्जितः पीनगलः सन्मित्रो वहवालयास्तुकट्यिर्धनाढ्यः।
ह्रस्वश्च वक्रो द्रुतगः कुलीरे मेधान्वितस्तोयरतोऽल्प पुत्रः।।
फल दीपिका

आप जीवन में विभिन्न प्रकार की सम्पत्तियों तथा द्रव्यों का स्वामित्व प्राप्त करेंगी। ज्योतिष शास्त्र के विषय में आपको ज्ञान रहेगा। आपका सम्पूर्ण जीवन चन्द्रमा की कलाओं के समान क्षयवृद्धि को प्राप्त होगा अर्थात् उतार चढ़ाव आते रहेंगे। आप केवल स्नेह से ही वश में हो सकती हैं। बलपूर्वक आपसे कोई कार्य नहीं करवाया जा सकता। आप अपने मित्रों को पूर्ण

आदर तथा सम्मान देने वाली होंगी। साथ ही जीव पालन, बाग बगीचे, उद्यान या जलाशय इत्यादि के निर्माण में आपकी गहरी रूचि रहेगी।

आवक्रद्रुतगः समुन्नतकटिः स्त्रीनिर्जितः सत्सुहृद्।
देवज्ञा प्रचुरालयः क्षयधनैः सयुंज्यतेः चन्द्रवत्।।
ह्रस्वः पीनगलः समेति च वशं साम्ना सुहृदवत्सलः।
तोयोद्यानरतः स्ववेश्मसहितै जातः शशाळङकैः नरः।।
बृहज्जातकम्

आप सौभाग्यवती होकर स्वनिर्मित गृह में निवास करेंगी तथा जो भी कार्य करेंगी उसे धैर्यपूर्वक सम्पन्न करेंगी। अपने अधिकांश समय को आप भ्रमण तथा यात्रा में व्यतीत करेंगी तथा विनयशीलता के गुण से आप नैसर्गिक रूप से सुसम्पन्न रहेंगी तथा कामवासना के प्रति भी आपका पूर्ण आकर्षण रहेगा। कृतज्ञता के सद्गुण से आप सुशोभित रहेंगी। आप राज्य में किसी उच्च अधिकार प्राप्त पद को अलंकृत करने की भी क्षमता रखेंगी। सत्य का आप हमेशा पालन करेंगी तथा यत्नपूर्वक सत्य तथा प्रिय भाषण ही करेंगी।

युक्तः सौभाग्ययोग्यैगृह सुहृदरटन ज्यौतिषज्ञान शीलैः।
कामासक्तकृतज्ञः क्षितीपतिसचिवः सत्प्रमाण प्रवासी।।
सोन्मादः केशकल्पो जलकुसुमरुचि र्हानिवृद्धयानुयातः।
प्रासादोद्यानवाणीप्रियकरणरतः पीनकण्ठः कुलीरे।।
सारावली

देव गण में उत्पन्न होने के कारण आपकी वाणी उत्तम तथा सबको प्रिय लगने वाली होगी जिससे सभी लोग आपसे प्रभावित रहेंगे। आप सरल बुद्धि की स्वामिनी होंगी तथा सादगी से विचार प्रकट करना तथा अन्य के विचारों को ग्रहण करने में अत्यन्त चतुर होंगी। आप शुद्ध तथा अल्प सात्विक भोजन लेना पसन्द करेंगी। गुणों की आप ज्ञाता होंगी तथा स्वयं महान विभूतियों द्वारा वर्णित गुणों से युक्त रहेंगी। साथ ही धन ऐश्वर्य से आप आजीवन परिपूर्ण रहेंगी। किसी भी प्रकार का आपको अभाव महसूस नहीं होगा।

आपका शरीर सुन्दर तथा सौन्दर्यमय होगा। दानशीलता की प्रवृति का आप प्रदर्शन करती रहेंगी जिससे समाज में आपकी प्रतिष्ठा की वृद्धि होगी। आप सादगी पसन्द होंगी तथा भौतिकता तथा दिखावटीपन से दूर ही रहेंगी। साथ ही समाज में एक विदुषी की तरह आपका सम्मान किया जाएगा।

सुस्वरः सरलोक्तमतिः स्यादल्पभोजन करो हि नरश्च।
जायते सुरगणे डणज्ञः सुज्ञवर्णितगुणो द्रविणाढ्यः।।
जातकाभरणम्

अर्थात देवगण का जातक अच्छी वाणी वाला, सरल बद्धि से युक्त, अल्प मात्रा में भोजन करने वाला, अन्य जनों के गुणों का ज्ञाता, महान विद्वानों द्वारा वर्णित गुणों से युक्त तथा

वैभवशाली होता है।

आप मेष योनि में उत्पन्न हुई हैं। अतः प्रारम्भ से ही आप परम उत्साही रहेंगी। इसी उत्साह से जीवन में खूब उन्नति करेंगी। आप वीरता के गुण तथा युद्ध विद्या में निपुण हो सकती हैं। धन, वैभव तथा ऐश्वर्य से आप हमेशा युक्त रहेंगी। आप समस्त भौतिक सुखों का आजीवन उपभोग करेंगी। आप परोपकार की भावना से सुशोभित रहेंगी तथा अन्य जनों की भलाई करने के लिए तन मन धन से हमेशा तत्पर रहेंगी।

महोत्साही महायोद्धा विक्रमीविभवेश्वरः।
नित्य परोपकारी च मेषयोनौ भवेन्नरः।
मानसागरी

अर्थात मेषयोनि का जातक अतिउत्साही, महायोद्धा, पराक्रमी, ऐश्वर्यवान तथा परोपकारी होता है।

आपके जन्म काल में चन्द्रमा पंचम भाव में स्थित है। अतः आप माता की परम प्रिय रहेंगी। उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा एवं आयु भी लम्बी होगी। धन धान्य से वे सर्वदा युक्त रहेंगी तथा जीवन में आपको प्रत्येक क्षेत्र में अपना सहयोग प्रदान करेंगी। साथ ही कला, नीति, विद्या आदि में भी आपको नित्य प्रोत्साहित करती रहेंगी एवं इनकी वृद्धि में उनका मुख्य सहयोग रहेगा। वे स्वभाव से भी अत्यन्त सुशील होंगी तथा आपको नित्य अच्छी शिक्षाएं देती रहेंगी।

आप की भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा एवं सम्मान की भावना रहेगी एवं उनकी आज्ञापालन के लिए नित्य तत्पर रहेंगी। जीवन में उनकी सेवा करना अपना कर्तव्य समझेंगी तथा अवसरानुकूल उनको वांछित आर्थिक या अन्य प्रकार से सहयोग एवं सहायता प्रदान करेंगी। आपके संबंध मधुर रहेंगे तथा किसी भी प्रकार से आपकी मतभेद नहीं रहेंगे।

आपके जन्म समय में सूर्य की स्थिति सप्तम भाव में है अतः पिता की आप प्रिय रहेंगी। उनका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं आयु भी लम्बी होगी। आपके शुभ प्रभाव से धनलाभ प्राप्त करने में वे सफल होंगे तथा जीवन में सर्वप्रकार से आपकी सहायता एवं सहयोग करने के लिए तत्पर रहेंगे। आपके विवाह कराने में उनका पूर्ण सहयोग रहेगा। साथ ही आप उनकी विश्वास पात्र भी होंगी।

आपकी भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान की भावना रहेगी तथा उनकी आज्ञा पालन में भी नित्य रूचिशील रहेंगी। आपके आपसी संबंध मधुर होंगे परन्तु यदा कदा कुछ सैद्धान्तिक मतभेद भी होंगे जिससे सम्बन्धों में क्षणिक तनाव एवं कटुता उत्पन्न होगी परन्तु कुछ समयोपरान्त सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा। इसके साथ ही आप जीवन में उनकी सहायता करने के लिए भी तत्पर रहेंगी एवं अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार से कष्ट नहीं होने देंगी।

आपकी जन्म कुण्डली में मंगल की स्थिति चौथे भाव में है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं यदा कदा वे शारीरिक रूप से अस्वस्थ रहेंगे। आपके प्रति उनके

मन में स्नेह एवं सम्मान का भाव रहेगा तथा सुख दुःख में आपको हमेशा उनसे वांछित आर्थिक तथा अन्य प्रकार का सहयोग प्राप्त होता रहेगा। साथ ही व्यापार एवं आजीविका संबंधी कार्यों में भी वे आपकी पूर्ण सहायता करेंगे।

आप भी उनको मन से सम्मान एवं स्नेह प्रदान करेंगी तथा सुख दुःख में सर्वदा उनके साथ रहेंगी एवं यथाशक्ति उनको वांछित आर्थिक तथा अन्य प्रकार की सहायता भी प्रदान करती रहेंगी। आपके आपसी संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेदों के कारण संबंधों में कटुता या तनाव आएगा परन्तु कुछ समय के बाद स्थिति सामान्य हो जाएगी। साथ ही आप एक दूसरे से सहमत भी रहेंगे एवं विश्वास पूर्वक जीवन में परस्पर सहयोग का भाव रखेंगे।

आपके लिए पौष मास, द्वितीया, सप्तमी तथा द्वादशी तिथियाँ शुक्ल तथा कृष्ण पक्ष दोनों की, अनुराधा नक्षत्र, व्याघात योग, नागकरण, बुधवार, तृतीय प्रहर तथा मीन राशिस्थ चन्द्रमा अनिष्ट फलदायक हैं। अतः आप 15 दिसम्बर से 14 जनवरी के मध्य 2,7,12 तिथियों, अनुराधा नक्षत्र, व्याघात योग तथा नागकरण में कोई भी शुभकार्य सम्पन्न न करें अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी। साथ ही बुधवार, तृतीय प्रहर तथा मीन राशि के चन्द्रमा को भी शुभ कार्यों में वर्जित रखें तथा इन दिनों एवं समय में शारीरिक सुरक्षा तथा स्वास्थ्य का भी उचित ध्यान रखें।

यदि आपके लिए समय शुभ न चल रहा हो मानसिक अशान्ति हो रही हो व्यापार में हानि अथवा नौकरी या पदोन्नति प्राप्ति में बाधा उत्पन्न हो रही हो तो ऐसे समय में आपको अपने इष्ट देव शंकर भगवान को नित्य विल्वपत्र चढाने चाहिए तथा सफेद मोती, सफेद वस्त्र, चावल इत्यादि पदार्थो का श्रद्धापूर्वक दान करना चाहिए एवं सोमवार के भी व्रत रखने चाहिए। इसके अतिरिक्त चन्द्रमा के तांत्रीय मंत्र के कम से कम 10000 जप सम्पन्न करवाने चाहिए। इससे आपको मानसिक शान्ति प्राप्त होगी तथा लाभमार्ग भी प्रशस्त होंगे।

ऊँ श्रां श्रीं श्रों सः चन्द्रमसे नमः।
मंत्र- ऊँ ऐं क्लीं सोमाय नमः।